



श्रीमद्भगवद्गीता के ई-लर्निंग का एक अध्ययन

कृष्ण कुमार^{1*}, डॉ. सावित्री गहोई²

1. शोधार्थी, श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत
ouriginal.sku@gmail.com,
2. प्रोफेसर, श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश: विश्व के लिए भारत का सबसे बड़ा योगदान पवित्र गीता है। युद्ध के मैदान में अर्जुन को मारा गया, जब उसने अपने रिश्तेदारों को विरोधियों के रूप में देखा। उसे प्रेरित करने के लिए भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्ध क्षेत्र कुरुक्षेत्र में अपने कर्तव्य को निभाने के लिए एक परामर्श के रूप में प्रचारित किया जाता है, लोगों के सामने आने वाली समस्याओं के अनुरूप व्याख्याकारों द्वारा विभिन्न दृष्टिकोण जो स्वतंत्र रूप से भगवद गीता के मूल पाठ को पढ़ना और समझने की इच्छा रखते हैं। हमारा मूल उद्देश्य विभिन्न संस्कृत कम्प्यूटेशनल टूल्स और अपनाई गई कार्यप्रणाली की मदद से भगवद्गीता को समझने के लिए ई-लर्निंग माहौल प्रदान करना है। प्राचीन भारतीय टीका परंपरा से विभिन्न सुराग जिनसे हमने भाषाई विश्लेषण के लिए कार्यप्रणाली अपनाई।

मुख्य शब्द: श्रीमद्भगवद्गीता, ई-लर्निंग, भाषाई विश्लेषण, संस्कृत

----- X -----

परिचय

भगवद्गीता का शाब्दिक अर्थ है, 'द लॉर्ड्स सांग', अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण के दार्शनिक प्रवचन अनिच्छुक अर्जुन को लड़ने के लिए राजी करने के लिए। विश्व के लिए भारत का सबसे बड़ा योगदान पवित्र गीता है। युद्ध के मैदान में अर्जुन को मारा गया, जब उसने अपने रिश्तेदारों को विरोधियों के रूप में देखा। उसे प्रेरित करने के लिए भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्ध क्षेत्र कुरुक्षेत्र में अपने कर्तव्य को निभाने के लिए एक परामर्श के रूप में प्रचारित किया जाता है, जबकि प्रतीक्षा में खड़े पुरुषों की भीड़ ने एक राजकुमार के रूप में, एक योद्धा के रूप में, एक धर्मी व्यक्ति के रूप में बुराई के खिलाफ लड़ने और शांति और व्यवस्था बहाल करने के लिए शिक्षा दी (कूलसन, 2003)।

एनी बेसेंट के इस वाक्य में गीता के केंद्रीय शिक्षण को खूबसूरती से संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है: 'यह आकांक्षी को त्याग के निचले स्तरों से उठाने के लिए है, जहां वस्तुओं का त्याग किया जाता है, बुलंद ऊंचाइयों तक जहां इच्छाएं मर जाती हैं, और जहां योगी शांत और निरंतर चिंतन में रहता है, जबकि उसका शरीर और मन सक्रिय रूप से उन कर्तव्यों के निर्वहन में कार्यरत है, जो जीवन में उनके बहुत से गिर जाते हैं। शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान प्रदान करना है। सच्ची शिक्षा बच्चों को न केवल बौद्धिक उत्तेजना प्रदान करेगी, बल्कि जीवन में एक वास्तविक उद्देश्य भी प्रदान करेगी। भगवत गीता शिक्षा का पवित्र कंधी बनानेवाले की रेती है क्योंकि यह सभी सिद्धांतों और दर्शनों का सार है। यह शुद्धतम ज्ञान प्रदान करता है और आत्मबोध की सीधी समझ देता है (देशपांडे, 2007)।

गीता की मेटा-फिजिक्स

गीता में अध्यापन का महत्वपूर्ण तात्त्विक बिंदु बताया जा रहा है। असत्य की गीता अधिवक्ताओं वहां कोई नहीं जा रहा है और असली वहां कोई गैर है। आत्मा शाश्वत, अजन्मे, अविनाशी, अकम, सर्वसंग्रही, अकल्पनीय और अपरिवर्तनीय, अप्राप्य है। आत्मा को तलवार से नहीं मारा जा सकता, उसे आग, वायु या वर्षा से कम या नष्ट नहीं किया जा सकता। न तो आत्मा पैदा होती है और न ही वह मर जाती है यह बाहर है और अमर और अनन्त है। वह, जो सभी प्राणियों में समान रूप से बैठे परम वास्तविकता पाते हैं और नाश करने वाले निकायों के साथ अविनाशी, वास्तव में देखते हैं। भक्ति को परमात्मा की अरुचि सेवा के रूप में परिभाषित किया गया है। इसलिए यह कर्म का एक रूप है। प्रभु स्वयं अपने भक्तों को 'जन्म-मरण के सागर' से उठा लेते हैं। परमात्मा का प्रेम करना परमात्मा और परम प्रेम बन जाता है (ईश्वरन, 2007)।

भगवद्गीता और शिक्षा

गीता कहती है, शिक्षा का वास्तविक अर्थ आभासी ज्ञान प्राप्त हो रहा है लेकिन प्रश्न उठता है कि आभासी ज्ञान क्या है? जब भी हम देखते हैं या हम विविधता में ब्रह्मांड महसूस करते हैं और भगवान हर जगह मौजूद है। "सच्चा ज्ञान वह है जो हमें प्रत्येक आत्मा में परमेश्वर को देखना सिखाता है"। प्रभु कहते हैं कि सभी शुद्धतम ज्ञान के सर्वोच्च और उसका सार है कि ज्ञान वेदों के विस्तृत अध्ययन और विभिन्न प्रकार के उपनिषदों से प्राप्त हुआ था। भगवत गीता में आत्मा के महत्व पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। प्रभु कहते हैं कि यह शरीर नाशवान है और आत्मा नाशवान नहीं है। यह ज्ञान का एक गोपनीय भाग है; बस यह जानते हुए भी कि शुद्ध आत्मा शरीर से अलग है जो समाप्त होने वाली है, आत्मा एक ही रहती है और अमर हो जाती है। लेकिन वास्तव में यह तथ्य नहीं है, शरीर से मुक्त होने के बाद आत्मा, जो इतनी सक्रिय है, यह हमेशा सक्रिय रहता है (गांधी, 2010)।

भगवद गीता के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य:

- आभासी ज्ञान का विकास
- व्यक्तित्व का विकास और संशोधन
- व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्यों में समायोजन
- आंतरिक चेतना का विकास
- बौद्धिक और तर्क क्षमता का विकास
- जीवन में कर्तव्यों के महत्व की स्थापना

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय का सारांश

सबसे विचित्र बात यह है कि भगवद्गीता के अठारह अध्यायों में से प्रत्येक को अध्याय 5 के निकट योग के एक स्वतंत्र विशेष रूप के रूप में नामित किया गया है लेकिन ये अध्याय-शीर्षक महाभिषेक के संस्कृत संस्करण में दिखाई नहीं देते हैं। इसलिए अध्याय की सामग्री की उनकी समझ के आधार पर, बाद में संपादकों अध्याय खिताब जोड़ा प्रत्येक अध्याय की सामग्री के प्रति पाठक सहायता करने के लिए। यही कारण है कि भगवद्गीता में अध्याय का शीर्षक एक मुद्रित संस्करण या संपादक से दूसरे में भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, अठारहवें अध्याय का शीर्षक मोक्षासंन्यासा योग है जिसे कुछ विद्वानों द्वारा मोक्ष योग और दूसरों द्वारा संन्यासा योग के रूप में भी जाना जाता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हमने गीता प्रेस की श्रीमद्भगवद्गीता का अनुसरण किया है और इसलिए प्रत्येक अध्याय का शीर्षक प्रति से बरकरार रखा गया है। हम प्रत्येक अध्याय की एक संक्षिप्त सामग्री के नीचे देते हैं। हमने उनका अनुवाद किए बिना मूल संस्कृत शब्दों को बनाए रखा है क्योंकि हमें एंगली में उपयुक्त समकक्ष नहीं मिला (गोल्डमैन, 2009)।

(1) **अर्जुन-विषदा योग:** अर्जुन-विषदा योग के नाम से विख्यात प्रथम अध्याय में 47 श्लोक हैं। अर्जुन युद्ध में अपने सभी रिश्तेदारों और दोस्तों को देखने पर विनाशकारी युद्ध परिणामों के बारे में सोचा से भयभीत है। वह इस भ्रम को दूर करने के लिए कृष्णा से मदद और सलाह मांगता है। भ्रम के साथ अर्जुन का यह संबंध जो अंततः सर्वोच्च सत्य की ओर ले जाएगा, जिसे उपयुक्त रूप से अर्जुन-विषदा योग के रूप में जाना जाता है।

(2) **सर्वाध्या योग:** दूसरे अध्याय को सर्वाध्या योग के नाम से जाना जाता है और इसमें 72 श्लोक होते हैं। कृष्णा आत्मा के अमर स्वरूप, सर्वाध्या योग, बुद्धि योग, कर्मयोग, स्थितप्राज्ञ (दृढ़ द्रव) का स्वरूप और अर्जुन को ब्राह्मण का ज्ञान प्रदान करता है। कविता 11 में 'असोसायनवाश्वा' शब्द को गीता माना जाता है क्योंकि इसे कृष्णा द्वारा दिव्य प्रवचन की शुरुआत माना जाता है। इस अध्याय में प्रमुख चर्चा स्याध्या (सायक ख्यानम यानी पच्चीस टाटवास या सच्चे सिद्धांतों की उचित गणना) के बारे में है और इसलिए शीर्षक साध्या योग है।

(3) **कर्मयोग:** कर्मयोग शीर्षक वाले तीसरे अध्याय में 43 श्लोक होते हैं। यहां जनाना और कर्मयोग का विस्तार किया जाता है। 7 कर्म मूल रूप से परिणामों के लिए किसी भी लगाव के बिना किसी के धर्म का प्रदर्शन का मतलब है। कर्म के प्रदर्शन की कुंजी यानी उचित कार्रवाई का विषय यहां मुख्य विषय है, इसलिए शीर्षक कर्मयोग है।

(4) **जिनना-कर्म-सान्यासा योग:** चौथे अध्याय को जिन्ना योग के नाम से जाना जाता है और इसमें 42 छंद होते हैं। यहाँ यज्ञसी के विभिन्न प्रकार का वर्णन किया गया है, लेकिन ज्ञान यज्ञ: उनमें से बेहतर है। जानबूझकर कर्म का त्याग (और कर्म का फल) कर्म के कलंक से मुक्त होने का सबसे सुरक्षित तरीका है। 8 इसलिए कर्म का ज्ञान विस्तार से दिया जाता है।

(5) **कर्म-संन्यास योग:** संन्यास योग नामक पांचवें अध्याय में 29 श्लोक हैं। यहां कर्म के प्रदर्शन और कर्म के त्याग के बीच भेद किया जाता है। अधिक जोर कर्म और टुकड़ी के प्रभाव से इसके प्रभाव से डाल दिया है के रूप में कविता में दिया 13.9 कई समानताएं चौथे और पांचवें अध्याय में उल्लेख कर रहे हैं।

(6) **अतमासायमा योग:** छठे अध्याय को ध्याना योग के नाम से भी जाना जाता है जिसमें 47 श्लोक होते हैं। इसका मुख्य विषय आत्मसंयम और मन की एकाग्रता के माध्यम से है। 10 ध्यान योग के माध्यम से ध्यान करने के लिए कौन सा रूप इस अध्याय में वर्णित है।

(7) **जिनना-विशना योग:** जेना-विजना योग नामक सातवें अध्याय में 30 छंद हैं। यहां 'जिना' का अर्थ है निरपेक्ष (ब्राह्मण) का ज्ञान जबकि 'विज्ञा' का अर्थ सांसारिक ज्ञान है।

(8) **अक्सरब्रह्म योग:** आठवें अध्याय को अक्सरब्रह्म योग के नाम से जाना जाता है और इसमें 28 श्लोक होते हैं। इसमें असाध्य भावना (ब्रह्म) के साथ संघ का वर्णन है। 12 इसलिए अक्सरब्रह्मा योग का शीर्षक है।

(9) **रजविद्या योग:** रजविद्या योग शीर्षक से नौवें अध्याय में 34 छंद हैं। आध्यात्मिक जीवन जीने का तरीका यहां का मुख्य विषय है। 13 दिव्य ज्ञान यहां खुलेआम वर्णित है, लेकिन शाही नीति के ज्ञान का एक अंडरटोन है।

(10) **विभोति योग:** विभोती योग के नाम से विभोरी योग के नाम से जाने जाने वाले दसवें अध्याय में 42 श्लोक होते हैं। यहां परममान्य की भव्यता जो सभी प्राणियों में व्याप्त है और प्रभु को कैसे साकार किया जाए, इसका वर्णन किया गया है। 14 सर्वोच्च होने के प्रकट रूप पर जोर दिया है।

(11) **विश्वरूपदार्पण योग:** विश्वरूपदार्पण योग शीर्षक वाले ग्यारहवें अध्याय में 55 श्लोक हैं। सूक्ष्म ब्रह्मांडीय रूप के वर्णन के बाद, अर्जुन के अनुरोध पर कृष्णा मैक्रो-कॉस्मिक या सार्वभौमिक रूप प्रदर्शित करता है जिसमें अस्तित्व में सभी प्राणियों को शामिल किया गया है।

(12) **भक्ति योग:** बारहवें अध्याय को भक्ति योग के नाम से जाना जाता है और इसमें 20 श्लोक होते हैं। कृष्णा भक्त के गुणों का वर्णन करता है और भक्ति की महिमा पर जोर देता है।

(13) **कृष्णत्राक्षराजना योग:** कृष्णत्राक्षराजना योग शीर्षक वाले तेरहवें अध्याय में 34 श्लोक हैं। 'कृष्णत्रा' शब्द का अर्थ है भौतिक कारण (प्रकृति) या शरीर को क्रिया के क्षेत्र के रूप में जबकि 'कृष्णराजना' का अर्थ आत्मा से होता है। इस अध्याय में दोनों के बीच का अंतर बताया गया है।

(14) **गुतात्रयविभाग: योग:** गुतात्रयविभाग: योग के नाम से जाने जाने वाले चौदहवें अध्याय में 27 श्लोक हैं। तीन गुणों अर्थात्, सटविक, रजसिक और टैमासिक, उनके कारणों, विशेषताओं और जीवित प्राणियों पर प्रभाव का विस्तार भी वर्णित है।

(15) **पुरुषोत्तम योग:** पुरुषोत्तम योग शीर्षक वाले पंद्रहवें अध्याय में 20 श्लोक हैं। इस अध्याय में संसार का स्वरूप और कैसे ट्रेनिंग करना है, इसका वर्णन किया गया है। मुख्य विषय परम के साथ व्यक्तिगत आत्मा का परम संघ है। यहां 'कृष्णरा' शब्द पंचभूत: (पांच तत्व), मन, बुद्धि और अहंकार का एक संयोजन है, जबकि 'अक्षिता' व्यक्तिगत आत्मा है।

(16) **दैत्यसुरसाध्यपदविभाग योग:** सोलहवें अध्याय को दैत्यसुरसिद्धाभिषेक योग के नाम से जाना जाता है और इसमें 24 श्लोक होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के दो लक्षण होते हैं यानी उनमें परमात्मा (डीवा) और राक्षसी (असुर) होते हैं और एक दूसरे के ऊपर एक के प्रभुत्व के संबंध में लगातार संघर्ष होता है।

(17) **श्रद्धाविभागा योग:** श्रीदंघावायभेगा योग शीर्षक वाले सत्रहवें अध्याय में 28 श्लोक हैं। 'श्रद्धा' शब्द का अर्थ है विश्वास या विश्वास जो तीन गुणों की तरह तीन डिवीजनों में वर्गीकृत किया गया है अर्थात्, सात्विक, राजसिक और तैमसिक।

(18) **मोक्षासन्यास योग:** मोक्षासन्यासा योग के नाम से विख्यात अठारहवें अध्याय में 78 श्लोक हैं। इस समापन अध्याय में, सन्यासा के बीच भेद किया जाता है जो इच्छा और त्यागा से जन्मे कार्यों का त्याग है जो कर्मों के फलों का त्याग है। अंततः अर्जुन, सभी प्रकार की शंकाओं से मुक्त होकर कृष्णा के प्रति समर्पण करता है और अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है।

श्रीमद्भगवद्गीता और उसके टिप्पणीकार

यह छोटा रहस्यपूर्ण भाग भगवद गीता जो उपनिषद शिक्षाओं का सारांश देता है, वह भारी कार्य महाभिषेक का एक हिस्सा है और दार्शनिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, नैतिक, सामाजिक, साथ ही सांस्कृतिक व्याख्या जैसे विभिन्न कोणों से विद्वानों द्वारा व्याख्या की जाती है। यह प्रत्येक को इसे समझने और इसे अपने तरीके से व्याख्या करने में सक्षम बनाता है, इस प्रकार सदियों से कई विद्वानों का ध्यान आकर्षित करता है, जिससे यह दुनिया में सबसे लोकप्रिय अनुवादित और टिप्पणी में से एक है। हमने टिप्पणियों के इतिहास में मोटे तौर पर तीन चरणों को प्रतिष्ठित किया है (महादेवन, 2013)।

1. **उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व:** वेदांता, साक्षात, योग और अन्य ईश्वरवादी स्कूलों जैसे विचारों के विभिन्न स्कूलों में रचनात्मक और व्यवस्थित विचारक थे, जिन्होंने अपनी परंपरा के अनुसार भगवत गीता की व्याख्या की। वेदांता के सभी स्कूलों ने उपनिषदों, ब्रह्मास्त्र और भगवद गीता (जिसे प्रशातत्रा के नाम से जाना जाता है) के अधिकार को अपनी परंपरा की नींव के रूप में स्वीकार किया। हालांकि, कम से कम एक आवश्यक बिंदु या अन्य में राय में मतभेद थे।

2. **उन्नीसवीं शताब्दी:** ब्रिटिश शासन के युग के दौरान, संस्कृत भाषा रुचि का विषय बन गई और अंग्रेजी और अन्य पश्चिमी भाषाओं में कई कार्यों का अनुवाद किया गया। चार्ल्स विल्किंस ने सबसे पहले भगवद गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया था। पश्चिमी दार्शनिक और शॉटेनहॉयर, हम्बोल्ट और इमर्सन जैसे विचारक इस कविता से बहुत प्रभावित थे। इस काल में भारतीय क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानियों के दंगे देखे गए, जो भगवद गीता से काफी प्रेरित थे और भगवद गीता पर स्वतंत्र रूप से लिखे गए थे।

3. **उन्नीसवीं शताब्दी के बाद:** प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास और उन्नति के साथ, भगवद गीता पर कार्य संचार के विभिन्न आधुनिक माध्यमों में उपलब्ध कराए जा रहे हैं। भगवद्गीता को बढ़ावा देने और पढ़ाने वाली विभिन्न वेबसाइटों ने पाठ की आसान पहुंच पैदा कर दी है। आईआईटी-कानपुर द्वारा विकसित गीता सुपरसाइट जैसी कुछ वेबसाइट्स हैं, जिनमें प्राचीन संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी की टिप्पणियों और भगवद गीता के अनुवाद के इलेक्ट्रॉनिक ग्रंथ अपलोड किए गए हैं। चिन्मय फाउंडेशन, इस्कॉन, श्री रामकृष्ण मठ, अरबिंदो सोसायटी आदि जैसी विभिन्न प्रसिद्ध और प्रमुख धार्मिक संस्थाएं भी भगवद गीता पढ़ाने के लिए विभिन्न प्रवचन और कक्षाओं के साथ-साथ होमस्टैडी किट का आयोजन कर रही हैं (बाएन, 2008)।

साहित्य की समीक्षा

गीता प्रेस के गोयंडका, (2016) और इसलिए प्रत्येक अध्याय का शीर्षक प्रति से बनाए रखा गया है। हम प्रत्येक अध्याय की एक संक्षिप्त सामग्री के नीचे देते हैं। हमने उनका अनुवाद किए बिना मूल संस्कृत शब्दों को बनाए रखा है क्योंकि हमें अंग्रेजी में उपयुक्त समकक्ष नहीं मिला था।

भावुक (2011) के तर्क में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भगवद्गीता एक ऐसी अवस्था की संभावना का वर्णन करती है जिसमें हम वास्तव में अनुभूति, भावना और व्यवहार से ऊपर उठ सकते हैं और कर्म योग को इस राज्य (मोक्ष की स्थिति) को प्राप्त करने की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह धारणा मुझे भगवत गीता की शिक्षाओं का संश्लेषण करने के लिए कुछ विचार प्रदान करती है ताकि तदनुसार शिक्षा के अर्थ का पता लगाया जा सके। एक संक्षिप्त वाक्य में, मेरी अपनी समझ पर आधारित होने के बाद, (वास्तव में बारहमासी) गीता को बार-बार पढ़ने और विद्वानों की धारणाओं का विश्लेषण करने के बाद, यह कहा जा सकता है कि: शिक्षा (विद्या) शांति, आनंद, संतुष्टि और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की प्रक्रिया है स्थिर मन और ज्ञान के साथ तीन क्रोध (वासना, क्रोध और भय) से छुटकारा पाने के लिए।

कुमार एट अल (2010) एक यौगिक के विश्लेषण में शामिल विभिन्न चरणों का वर्णन करते हैं जो यौगिक प्रोसेसर के प्राकृतिक मॉड्यूल भी बनाते हैं, पहले चरण में एक यौगिक अपने घटकों में विभाजित होता है। उदाहरण के लिए, उपरोक्त कविता से अभिक्रमणनाशी यौगिक को दो घटकों में विभाजित किया जाता है, दवंडवा और बाहुपा बाहुवरिही (संयोजिका) के अपवाद के साथ संस्कृत यौगिक बाइनरी होते हैं। इसलिए जब एक यौगिक में एक से अधिक घटक होते हैं, तो घटक घटकों को अकेले दिखाने के लिए पर्याप्त नहीं होता है। के लिए, जिस तरह से घटकों को एक साथ गठबंधन एक यौगिक का अर्थ तय करता है। 3 घटकों ए-बी-सी के साथ एक यौगिक को दो अलग-अलग तरीकों से जोड़ा जा सकता है, और। निर्वाचन क्षेत्र पार्सर का कार्य एक समय में घटकों को एक निश्चित क्रम दो में बांधकर खंडित यौगिक वाक्यों को पार्स करना है।

रामकृष्णमाचारिलु (2009) ने एसएचएमटी कंसोर्टियम द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए इन सभी संबंधों को मैनुअल रूप से टैग किया गया है। वहां सूचीबद्ध लगभग 90 संबंधों में से केवल वे संबंध जो एक वाक्य में उपलब्ध वाक्य-अर्थ जानकारी के आधार पर भविष्यवाणी कर सकते हैं, उन्हें स्वचालित टैगिंग के लिए माना जाता है। उनमें से लगभग 35 हैं। पूर्ण भगवद्गीता को इस टैग सेट का उपयोग करके सिंटैक्स स्तर पर टैग किया गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि

श्रीमद्भगवद्गीता का ई-शिक्षण, अध्ययन को तीन चरणों में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् भाषाई विश्लेषण, शिक्षाशास्त्र और इंटरफ़ेस विवरण और श्रीमद् भगवद् गीता के ई-लर्निंग के लिए शिक्षण मॉड्यूल तैयार करना।

भाषाई विश्लेषण

अध्ययन के पहले चरण में भगवद् गीता का संपूर्ण भाषाई विश्लेषण शामिल होगा। विभिन्न संस्कृत कम्प्यूटेशनल उपकरण हैं। ये संस्कृत ग्रंथों के ऑनलाइन विश्लेषण के लिए उपलब्ध हैं, जैसे कि संधि विभाजन, रूपात्मक विश्लेषण और वर्णनात्मक विश्लेषण। भगवद्-गीता के भाषाई विश्लेषण के लिए, हमने व्यापक रूप से मॉडल टूल का उपयोग किया है। इस विश्लेषण को करने के समय, पार्सर विकासशील चरण में होगा, और इसलिए हमने मैनुअल रूप से संवेदनशीलता विश्लेषण किया। तब यौगिक विश्लेषक भी उपलब्ध नहीं होगा, और इसलिए यौगिक विश्लेषण भी मैनुअल रूप से करना पड़ता था। प्रतिनिधित्व रूप विश्लेषण, पार्सर विश्लेषण और यौगिक विश्लेषण के लिए कंसोर्टियम दिशानिर्देशों का पालन किया जाएगा। यह पहला चरण भगवद् गीता के लिए इंटरफ़ेस बनाने की नींव है।

भगवद् गीता का भाषाई विश्लेषण प्राप्त करने की प्रक्रिया:

- पद्य रूप गद्य रूप में परिवर्तित हो जाता है।
- प्रारंभ में पद्य में संधि और यौगिक संघ द्वारा विकसित दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए मैनुअल रूप से खंडित होते हैं।
- फिर प्रत्येक परिसर को उसके प्रकार के लिए टैग किया जाता है, साथ ही पूरे निर्वाचन क्षेत्र के मार्क-अप के साथ। अंत में प्रत्येक यौगिक के लिए उसकी व्याख्या दी गई है।
- खंडित शब्द कई रूपात्मक विश्लेषणों को प्राप्त करने के लिए अनुसारक इंटरफ़ेस में चलाए जाते हैं। एक एक्सएमएल फ़ाइल के रूप में उत्पन्न आउटपुट को संदर्भ में सही मॉर्फ विश्लेषण चुनने के लिए मैनुअल रूप से काट दिया जाता है।
- सिनेक्टिको-सिमेंटिक संबंध (काराक विश्लेषण) में काराक के साथ-साथ गैर-कारक विश्लेषण शामिल हैं। संस्कृत व्याकरण ग्रंथ एक वाक्य के अर्थ की व्याख्या करने के लिए आवश्यक शब्दों के बीच विभिन्न संबंधों पर चर्चा करते हैं।
- प्रत्येक शब्द के लिए हिंदी और अंग्रेजी शब्दांश मैनुअल रूप से दिए गए हैं।
- अतिरिक्त भाषाई जानकारी जैसे व्युत्पत्ति संबंधी जानकारी, आदि।

शिक्षाशास्त्र और इंटरफ़ेस

दूसरे चरण में, संस्कृत भाषा को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों यानी प्राचीन भारतीय और पश्चिमी पर चर्चा करें। डिजिटल युग की शुरुआत के साथ, कैसे डिजिटल तकनीक और कम्प्यूटेशनल टूल का उपयोग शैक्षणिक और साथ ही कट्टरपंथी

शिक्षण में भगवद गीता के लिए एक इंटरैक्टिव प्लेटफॉर्म की मदद से किया जाएगा। मानव-मशीन 'इक्लेक्टिक मिक्स' यानी मानव विश्व ज्ञान और कम्प्यूटेशनल उपकरणों का संयोजन वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ी पर भी सकारात्मक प्रभाव पैदा करेगा। आज के परिदृश्य में इसकी उपयोगिता के अलावा भगवद गीता इंटरफ़ेस का एक चरण-दर-चरण लेआउट समझाया गया है।

- **शिक्षण पद्धति:** प्राचीन काल के दौरान, प्रत्येक भारतीय अनुशासन की संस्कृत ग्रंथों की व्याख्या की अपनी अलग शैली थी और इन ग्रंथों को पढ़ाने के लिए विभिन्न तरीकों, महत्वपूर्ण और साथ ही वैज्ञानिक, का इस्तेमाल किया। हमारा मुख्य ध्यान दो विधियों पर है, जैसे कि दशनवाय और खानवाय। पश्चिमी विधियों के आगमन और प्रभुत्व के साथ समय के साथ इन भारतीय विधियों को भुला दिया गया। हालाँकि बाद की विधियाँ संस्कृत पढ़ाने के लिए अपर्याप्त पाई गईं।
- **प्राचीन भारतीय पद्धतियाँ:** मूल संस्कृत कृतियों के अध्ययन से हमें शिक्षण की विधियों के बारे में प्रबुद्ध विचार प्रकट होते हैं। दो पारंपरिक तरीके अर्थात् संस्कृत के प्रभावी शिक्षण के लिए दानवय और खानवाय को नियोजित किया गया था।
- **पश्चिमी तरीकों का प्रभाव:** भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत के साथ, न केवल आधुनिक विज्ञान बल्कि आधुनिक भाषाओं और यहां तक कि संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा को पढ़ाने के लिए स्कूलों में पढ़ाने और सीखने के पश्चिमी तरीकों को धीरे-धीरे पेश किया गया। व्याकरण-अनुवाद विधि जो यूरोप में लैटिन और ग्रीक जैसी शास्त्रीय भाषाओं को पढ़ाने के लिए लोकप्रिय थी, को कई लोगों द्वारा संस्कृत पढ़ाने के लिए अपनाया गया था। पश्चिमी देशों ने संस्कृत भाषा सीखने और समझने के लिए इस पद्धति को अपनाया और भारतीयों ने अब तक इस प्रवृत्ति का पालन किया।
- **भाषा प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग:** आज की पीढ़ी अधिक प्रौद्योगिकी की समझ रखने वाली है और अक्सर सामाजिककरण, काम करने के साथ-साथ सीखने के लिए इंटरनेट/वेब का उपयोग करती है। हाल के वर्षों में संस्कृत के लिए कई कम्प्यूटेशनल उपकरणों का तेजी से विकास हुआ है। बेहतर समझ के लिए ई-रीडर अन्वय के साथ मूल पाठ तक पहुंच प्रदान करता है। पाठ में प्रत्येक शब्द का रूपात्मक विश्लेषण प्रदान किया जाता है विजुअलाइज़ेशन मजबूत जुड़ाव बनाने में मदद करता है। कराका और समास जैसी जटिल अवधारणाओं का चित्रमय प्रतिनिधित्व पाठक के लिए कार्य को आसान बनाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के लिए शिक्षण मॉड्यूल तैयार करना

भाषाई विश्लेषण करने के बाद, तीसरा और अंतिम चरण सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग करता है ताकि यह तय किया जा सके कि व्याकरण के हजारों नियमों में से क्या पढ़ाया जाए। व्याकरण के प्रासंगिक भाग का चयन पाठ की पसंद से प्रेरित होता है। पढ़ाए जाने वाले नियमों को भी उनके घटित होने की आवृत्ति के आधार पर क्रमबद्ध किया जाता है। भगवद गीता को समझने के लिए व्याकरण सीखने के विभिन्न पहलुओं, जैसे शब्द निर्माण और व्युत्पन्न आकृति विज्ञान, संधि, संसा और कारक के लिए यह रणनीति। इन व्याकरण पहलुओं के आधार पर हमने एक व्याकरण किट तैयार की है जिसका उपयोग भगवद गीता को पढ़ाने और सीखने के लिए किया जाएगा और साथ ही विशिष्ट नियमों को चुनने के लिए सांख्यिकीय तर्क भी दिया जाएगा।

विशेष रूप से भगवद-गीता के लिए एक व्याकरण किट विकसित करने का प्रयास स्वामी रामसुखदास द्वारा किया गया था, जिन्होंने 'गीता दर्पण', एनी बेसेंट, और भगवान दास को लिखा था, जिन्होंने संयुक्त रूप से 'द भगवद-गीता और श्री दीवानचंद्र शास्त्री' लिखा था, जिन्होंने 'गीतव्याकरणम्' लिखा था। 'भगवद-गीता' में केवल एक बुनियादी व्याकरण परिचय शामिल है, जिसमें कुछ भगवद-गीता उदाहरणों के साथ मुख्य विशेषताएं दी गई हैं, बेहतर सुविधा और पहुंच के लिए व्यवस्थित प्रारूप में आकृति विज्ञान, संधि, समास और कारक जैसी व्याकरण संबंधी जानकारी युक्त एक इंटरैक्टिव इंटरफ़ेस का विकास सम्मिलित हैं।

परिणाम और चर्चा

सांख्यिकीय विश्लेषण की उपयोगिता के साथ शुरू करते हैं और उसके बाद हमारे काम में इसके विशिष्ट महत्व के बारे में बताते हैं।

सांख्यिकीय विश्लेषण की उपयोगिता

सांख्यिकीय विश्लेषण अंतर्निहित पैटर्न और प्रवृत्तियों के साथ-साथ संबंधों को खोजने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र करने, विश्लेषण करने और प्रस्तुत करने के विज्ञान को संदर्भित करता है। इस प्रकार, यह विश्लेषण इसके लिए उपयोगी है:

- व्यवस्थित तरीके से डेटा एकत्र करना, प्रस्तुत करना और उसकी व्याख्या करना।
- वितरण के बारे में स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए डेटा का वर्गीकरण करना।
- जटिल डेटा को सरल बनाकर समझना।
- तुलना करने के लिए आधार और तकनीक प्रदान करना।
- विभिन्न परिघटनाओं के बीच संबंध का अध्ययन करना।
- एक सुसंगत पैटर्न की पहचान करना और उसका विकास करना।
- परिकल्पना तैयार करना और उसका परीक्षण करना।
- विभिन्न ग्राफ़ जैसे दृश्य साधनों के माध्यम से तर्कसंगत निष्कर्ष निकालना।

विजुअल एड्स

सांख्यिकीय आँकड़ों को रेखांकन जैसे दृश्य साधनों की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है। ग्राफ़ न केवल डेटा का दृश्य प्रदर्शन प्रदान करते हैं बल्कि डेटा की मुख्य विशेषताओं को भी उजागर करते हैं। यह डेटा के व्यवस्थित विश्लेषण और प्रस्तुति में मदद करता है। विभिन्न प्रकार के रेखांकन रेखा आलेख, पाई चार्ट, बार आलेख, हिस्टोग्राम आदि हैं। हमने सांख्यिकीय विश्लेषण प्रदर्शित करने के साथ-साथ निष्कर्ष को सारांशित करने के लिए अपने काम में विभिन्न आलेखों का उपयोग किया है।

श्रीमद-भगवद-गीता में सांख्यिकी का महत्व

हमारे काम के लिए, सांख्यिकीय विश्लेषण दो तरह से महत्वपूर्ण है:

शिक्षण में:

सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से हम इस विशिष्ट पाठ में संस्कृत भाषा की विभिन्न प्रमुख विशेषताओं के वितरण को जानते हैं। इससे विभिन्न पहलुओं की सटीकता और विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

यह वितरण हमें उन अभियोगात्मक और व्याकरणिक पहलुओं की पहचान करने में मदद करता है जो शिक्षण के दौरान ध्यान केंद्रित करने के लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए यह सुधार के क्षेत्रों और शक्ति के क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है।

परिणामस्वरूप हम आसानी से एक डोमेन विशिष्ट शिक्षण कैप्सूल विकसित कर सकते हैं जिसकी चर्चा अगले भाग में की गई है।

कम्प्यूटेशनल उद्देश्य के लिए:

व्याकरण के नियमों का पालन करते हुए वर्तमान उपकरण विकसित किए गए हैं। आगे के उपकरणों के विकास/सुधार के लिए सांख्यिकीय या मशीन लर्निंग या तंत्रिका नेटवर्क का उपयोग करने के लिए, यह डेटा उपयोगी था।

डोमेन विशिष्ट शिक्षण कैप्सूल

संस्कृत में साहित्य का विशाल भंडार है और प्रत्येक विषय की अपनी शब्दावली है। ऐसे कई विषय हैं जिनके विषयों में ग्रंथों को समझने के लिए संस्कृत के मध्यम ज्ञान की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक इतिहासकार को एक बिंदु बनाने के लिए मूल संस्कृत ग्रंथों का उल्लेख करने की आवश्यकता है। आयुर्वेद जैसे अनुशासन इस बात पर जोर देते हैं कि छात्रों को संस्कृत का अच्छा ज्ञान होना चाहिए ताकि वे आयुर्वेद की शब्दावली के साथ मूल संस्कृत ग्रंथों को पढ़ सकें और समझ सकें। हालाँकि, ये सभी छात्र संस्कृत का अध्ययन करने के लिए उपलब्ध थोड़े समय के भीतर संस्कृत में आवश्यक विशेषज्ञता हासिल

करने में विफल रहते हैं।

श्रीमद-भगवद-गीता शिक्षण मॉड्यूल

विशेष रूप से भगवद गीता के लिए व्याकरण किट विकसित करने के पिछले प्रयास स्वामी रामसुखदास द्वारा किए गए थे जिन्होंने 'गीता दर्पण', एनी बेसेंट और भगवान दास ने संयुक्त रूप से 'भगवद-गीता' और श्री दीवानचंद्र शास्त्री जिन्होंने 'गीताव्याकरण' लिखा था। 'भगवद गीता' में कुछ भगवद गीता उदाहरणों के साथ मुख्य विशेषताएं देने के लिए केवल बुनियादी व्याकरण परिचय है। दूसरी ओर, 'गीता दर्पण' ने उपयुक्त उदाहरणों के साथ भगवद गीता से संबंधित सभी प्रमुख पहलुओं को शामिल करते हुए व्याकरण को विस्तार से समझाया है। इसी तरह 'गीताव्याकरण' भगवद गीता से उदाहरण देते हुए वरदराजाचार्य के 'लघु सिद्धांत कौमुदी' पर आधारित है। शब्द निर्माण और व्युत्पत्ति प्रक्रियाओं (प्रक्रियाओं) पर इस पुस्तक में चर्चा की गई है जिसे हमने बाद के चरण के लिए अलग रखा है। इसके अलावा, हमने भगवद गीता में दुर्लभ उदाहरणों के विशिष्ट नियमों पर चर्चा नहीं की है। हालाँकि, उपर्युक्त ग्रंथों में जो कमी है वह व्याकरण के रूपात्मक और साथ ही सांख्यिकीय विश्लेषण है जिसे हमने अपने काम में शामिल किया है।

प्रोसोडिक विश्लेषण

अधिकांश संस्कृत साहित्य पद्य शैली में हैं जो एक विशेष चंदा (छंद) में रचित हैं। इन श्लोकों के जप का एक व्यवस्थित और लयबद्ध प्रवाह है जो उचित उच्चारण के साथ-साथ याद रखने में सहायता करता है। इस अध्याय में हम मीटर की बुनियादी विशेषताओं पर चर्चा करेंगे और उसके बाद उन मीटरों का संक्षिप्त विवरण जो भगवद गीता में उल्लेखित हैं, साथ ही आंकड़े और प्रत्येक मीटर के लिए एक उदाहरण।

'गण-चंदा' एक इकाई के रूप में माने जाने वाले त्रिपाठ्य पादों का एक क्रम है। पिंगला ने आठ प्रकार के गण दिए हैं जो तालिका 1 में दिखाए गए लघु और गुरु के सिलेबिक पैटर्न के आधार पर हैं:

तालिका 1: गण-वितरण

संख्या	गण	चिह्न	लक्षण
1	यज्ञ	SS	प्रथम
2	रागन	S S	मध्य
3	तगाना	SS	अंतिम
4	भगाना	S	प्रथम
5	जगाना	S	मध्य

6	सगाना	S	अंतिम
7	मगन	SSS	सभी
8	नागाणा		सब

मीटर में एक और दिलचस्प और सबसे आवश्यक विशेषता 'यति' है जो एक पाद का पाठ करते समय लिया जाने वाला लयबद्ध विराम है। 'एक कैसुरा को मानक रूप से एक लाइन-आंतरिक विराम के रूप में समझा जाता है जिसे एक मीटर के प्रदर्शन में एक श्रव्य ठहराव के रूप में महसूस किया जा सकता है और जो अनिवार्य शब्द सीमाओं से जुड़ा होता है'।

रूपात्मक विश्लेषण

इस अध्याय में हम भगवद गीता के सभी शब्दों के रूपात्मक विश्लेषण के आँकड़ों को देखते हैं। रूपात्मक विश्लेषक प्रतिपादिका और धातु को उसके प्रत्यय के साथ दिखाते हुए व्याकरणिक विश्लेषण प्रदान करता है। यह प्रत्यय विभिन्न व्याकरणिक विशेषताओं जैसे लिंग, संख्या, व्यक्ति, मामला, लकार आदि की जानकारी को कूटबद्ध करता है। कई बार शब्द अस्पष्ट भी होते हैं, उदाहरण के लिए 'रामः' शब्द के दो विश्लेषण हैं, राम {पम} {1;एक;} और रा1{कर्तरी;लट;उ;बहू;परसमाईपदी;रा;अदादी}। पूर्व शब्द का विश्लेषण एक उपान्त (संज्ञा) के रूप में करता है, जबकि बाद वाला इसका विश्लेषण एक त्यंत (क्रिया) के रूप में करता है। लेकिन दिए गए संदर्भ में उनमें से केवल एक ही मान्य है।

हमने पाया कि 10 या अधिक संभावित विश्लेषणों के साथ काफी कुछ शब्द थे। तालिका 2 में बहुविश्लेषण के साथ शब्दों की आवृत्ति दी गई है।

तालिका 2: रूप स्तर की अस्पष्टता

विश्लेषण गिनती	शब्द	विश्लेषण गिनती	शब्द
1	5117	8	23
2	1681	9	27
3	1150	10	18
4	371	11	10

5	333	12	7
6	103	13	3
7	128	14	7
कुल शब्द			8978
औसत			1.90

विश्लेषणों की औसत संख्या भी (= 1.90) उच्च आकार पर थोड़ी सी लगती है। ये अलग-अलग रूप भाषण श्रेणियों के अलग-अलग हिस्सों से संबंधित नहीं हैं, लेकिन आमतौर पर एक ही 'पार्ट ऑफ स्पीच' (पीओएस) श्रेणी में आते हैं।

निष्कर्ष

विश्लेषणों ने हमें शिक्षण के लिए आवश्यक विस्तृत पाठ्यक्रम की योजना बनाने के लिए आवश्यक डेटा प्रदान किया। संस्कृत को पढ़ाने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों की जांच और वर्णन करता है, जो पारंपरिक भारतीय तरीकों जैसे 'दशनवायः और खानवाया' से शुरू होते हैं और दोनों तरीकों की तुलना करते हैं और उनके महत्व पर चर्चा करते हैं। कैसे पश्चिमी विधियों ने संस्कृत के शिक्षण को प्रभावित किया शिक्षण में वर्तमान रुझानों के बाद चर्चा की जाती है। डिजिटल भाषा प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, हम इस तकनीक की मदद से शिक्षण के प्रभावी तरीकों को विकसित करने का प्रस्ताव करते हैं। हमने रेडी-टू-यूज भगवद गीता इंटरफेस विकसित किया है और सचित्र उदाहरणों के साथ इसकी विशेषताओं का विस्तृत विवरण प्रदान किया है और पाठक द्वारा इसका उपयोग कैसे किया जा सकता है।

संदर्भ

1. कूलसन, माइकल, अपने आप को संस्कृत सिखाओ। मैकग्रॉ-हिल कंपनियां, इंक, अमेरिका (2003)।
2. देशपांडे, एम.म., संस्कृतसुबोधिनी: एक संस्कृत प्राइमर। दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन, मिशिगन विश्वविद्यालय (2007) के लिए केंद्र।
3. ईश्वरन, एकनाथ, भगवद्गीता। नीलगिरी प्रेस, कैलिफोर्निया (2007)।
4. गांधी, एम.के., गीतापदरात्कोष। संस्कृत: गौरवा सचान, नई दिल्ली (2010)।
5. गोल्डमैन, रॉबर्ट और गोल्डमैन, सैली, देववाशप्रवेशिका:। मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली (2009)।
6. ह्यूट, गेअर्ड, शब्दकोश निर्देशित विभाजन और संस्कृत की टैगिंग। टिक्कनेन, बर्टिल और हेट्टेच में, हंस हेनरिक (एड्स), विषयों और पुराने और मध्य इंडो-आर्यन भाषा विज्ञान में कार्य, पीपी 307-325, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली (2006)।

7. महादेवन, बी, प्रेरणादायक नेतृत्व: गीता से परिप्रेक्ष्य । डी के प्रिंटवर्ल्ड, नई दिल्ली (2013) ।
8. गोयण्डका, जयदयाल (2016), श्रीमद् भगवद्गीता (पड़चेडा-अनवैया)। गीता प्रेस, गोरखपुर, उप्र
9. रामकृष्णमाचार्य, के. पोक्कर, शीतल; शुक्ल, देवानंद और कुलकर्णी, अंबा, कर्णिका लेवल टैगिंग और दिशानिर्देशों के लिए एनोटेशन स्कीम। हैदराबाद (2011) ।
10. भारती, अक्षर और कुलकर्णी, अंबा, एक भाषा में सूचना कोडिंग: पैनिनियन व्याकरण से कुछ अंतर्दृष्टि । राणा में दिलीप (एड.), दधीमाही, जर्नल ऑफ चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन शोध संस्थान (2010) ।
11. कुलकर्णी, अंबा और शुक्ल, देवानंद, संस्कृत रूपात्मक विश्लेषणकर्ता: कुछ मुद्दे । भारतीय भाषा विज्ञान (2009) में।
12. सार्जेंट, विंथ्रोप, भगवद्गीता: पच्चीसवीं वर्षगांठ संस्करण । स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, न्यूयॉर्क (2009)।
13. बाएन, आरहाराल्ड, भाषाई डेटा का विश्लेषण: सांख्यिकी में एक व्यावहारिक परिचय । केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क (2008) ।
14. ऐनी ओ कीफे, माइकल मैककार्थी और कार्टर, रोनल्ड, कॉर्पस से क्लासरूम तक । केंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क (2007)।
15. ईजीन, थॉमस, परिचय संस्कृत (भाग द्वितीय) । मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली (2000) ।